आला हज़रत इमाम-ए-अहले सुन्नत
इमाम अहमद रज़ा
रदियल्लाहो तआला अन्हो

بسم اللہ الرحمن الرحیم

اِنْبَاءُ الْمُصْطَفٰی بِحَالِ سِرٍّ وَّ اَخْفٰی

का तर्जमा

रसूल का इल्मे गैब

-: तसनीफ़ :-

अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादिरी
फ़ाज़िले बरैलवी (अलैहिर्रहमा)

-: बफ़ैज़ :-

हुज़ूर मुफ़्तिए अअ्ज़म हज़रत अल्लामा शाह
मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा क़ादिरी नूरी (अलैहिर्रहमा)

بسم الله الرحمن الرحيم

मस्अला

चॉन्दनी चौक, मोती बाज़ार मुर्सिला कुछ ओलमा-ए-अहले सुन्नत, 21 रबीउलअव्वल शरीफ़ 1318

क्या फ़रमाते हैं ओलमा-ए-किराम अहले सुन्नत इस मस्अले में के ज़ैद (जनाब मौलाना हिदायत रसूल साहब लखनवी) दावा करते है कि रसूलुल्लाह ﷺ को अल्लाह तआला ने इल्मे ग़ैब अता फ़रमाया है। दुनिया में जो कुछ हुआ और होंगा, यहॉ तक के मख़्लूक़ की पैदाईश से दोज़ख़ व जन्नत में दाख़िल होने तक, और तमाम अव्वलीन (पहले के लोग) व आख़ेरीन (जो आख़िर में होंगे) सब को इस तरह देखते हैं, जिस तरह अपने हाथ की हथेली को, और इस दावे के सुबूत में क़ुरआन की आयतें व हदीसें व ओलमा के अक़वाल (बातें) पेश करता है।

बकर, (एक शख़्स) इस अक़ीदे को कुफ़्र व शिर्क कहता है और बहुत ही सख़्ती के साथ दावा करता है के हुज़ूर सरवरे आलम ﷺ कुछ नही जानते, यहॉ तक के आप को अपने ख़ातमे का हाल भी मालूम न था और अपने इस दावे के सुबूत में किताब "तक़्वीयतुल ईमान" (अज़ :- मौलवी इस्माईल दहलवी) की इबारतें पेश करता हैं, और कहता है के रसूलुल्लाह ﷺ के बारे में येह अक़ीदा के आप को इल्म ज़ाती था या येह के खुदा ने अता फ़रमाया था, दोनों तरह शिर्क हैं।

अब ओलामा-ए-रब्बानी की बारगाह में गुज़ारिश हैं के इन दोनों में से कौन हक़ पर और बुज़ुर्गानि दीन के अक़ीदे पर हैं और कौन बद मज़हब जहन्नमी है। और उम्र (एक तीसरे शख़्स) का दावा है के शैतान का इल्म (मआज़ल्लाह) हुज़ूर सरवरे आलम ﷺ के इल्म से ज़्यादा है, उसका गंगोही मुर्शिद (रशीद अहमद गंगोही) अपनी किताब "बरहीने क़ातिअ्" के सफ़ा 74 पर यूँ लिखता है के---"शैतान को वुस्अते इल्म नस से साबित हुई, फ़ख़्रे आलम की वुस्अते इल्म की कौन सी नसे क़ताई है" (यानी शैतान को ज़्यादा इल्म होना तो क़ुरआन से साबित है, फ़ख़्रे आलम ﷺ को शैतान से ज़्यादा इल्म है इस के लिए क़ुरआन में कोई खुली आयत नही)।

अलजवाब

بسم الله الرحمن الرحيم

ज़ैद (जनाब मौलाना हिदायत रसूल सहाब लखनवी) का कहना हक व सही हैं और बक्र का ग़ुरूर मरदूद व निहायत ही बुरा ख़्याल है । बेशक अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عزت عظمته ने अपने हबीबे अकरम صلى الله تعالى عليه وسلم को तमाम अव्वलीन व आख़ेरीन का इल्म अ़ता फ़रमाया । मशरिक से मग़रिब तक, अ़र्श से फ़र्श तक, सब उन्हें दिखाया, आसमानों व ज़मीन का गवाह बनाया, रोजे अव्वल से रोज़े आख़िर तक सब مَا كَانَ وَمَا يَكُوْن उन्हें बताया । इन चीज़ों में से जो अभी बयान हुई कोई ज़र्रा हुज़ूर के इल्म से बाहर न रहा, हबीबे करीम عليه افضل الصلوة والتسليم का अ़ज़ीम इल्म इन सब को घेरे हुए हैं, न सिर्फ़ थोड़ा बल्कि हर छोटे से छोटे व बड़े से बड़े, हर गीली व सुखी चीज़, जो पत्ता गिरता है, ज़मीन की अन्धेरियों में जो दाना कहीं पड़ा है, सब को जुदा जुदा जान लिया । ولله الحمد كثيرا बल्कि जो कुछ बायान हुआ हरगिज़ हरगिज़ मुहम्मद रसूलुल्लाह - صلى الله عليه وسلم का पूरा इल्म नहीं, صلى الله عليه وسلم وعلى آله وصحبه اجمعين बल्कि हुज़ूर के इल्म से एक छोटा हिस्सा है, अब तक इल्मे मुहम्मदी में वोह हज़ारों बे हद व ऐसे समुन्दर लहरा रहे हैं जिन के किनारे नहीं हैं जिन की हकीक़त को वोह ख़ूद जाने या उनका अ़ता करने वाला उनका मालिक व मौला ।

हदीस की किताबों व बहुत पहले के ओ़लमा-ए-किराम की किताबों व हदीस में फ़ायदा देने वाली इस की मुकम्मल दलीलें हैं और अगर कुछ न हो तो بحمد الله कुरआने अज़ीम ख़ूद चश्मदीद गवाह व इन्साफ़ करने वाला है ।

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—

"उतारी हम ने तुम पर किताब जिस में हर चीज़ का रौशन बयान है और मुसलमानों के लिए हिदायत व रहमत व बशारत" ।	وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ۝

और अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—

"क़ुरआन वोह बात नही जो बनाई जाए अगली क़िताबों की तस्दीक़ है और हर	مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِىْ بَيْنَ يَدَيْهِ

चीज़ का साफ़ जुदा जुदा बयान है"। || وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ

और अल्लाह तआला फ़रमाता है---

"हम ने किताब में कोई चीज़ छुपा नही रखी" مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ

जब क़ुरआने मजीद हर चीज़ का बयान है और बयान भी कैसा ! रौशन, और रौशन भी किस दर्जे का, तफ़्सील के साथ, और अहले सुन्नत के मज़हब में चीज़ हर मौजूद को कहते हैं ! तो अ़र्श से फ़र्श तक तमाम काएनात तमाम मौजूद चीज़ें इस बायान में दाख़िल हुए और तमाम चीज़ों में लव्हे महफ़ूज़ भी जिस में जो कुछ लिखा हुआ है उस सब तफ़्सील शामिल हैं । अब क़ुरआने अज़ीम से ही पूछ देखिये के लवहे महफ़ूज़ में क्या क्या लिखा हैं ।

अल्लाह तआला फ़रमाता है---

"हर छोटी बड़ी चीज़ लिखी हुई हैं" । || وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ -

और अल्लाह तआला फ़रमाता है---

"हर चीज़ हम ने एक रौशन पेशवा में जमा फ़रमा दी हैं" । || وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ -

और अल्लाह तआला फ़रमाता है---

"कोई दाना नहीं ज़मीन की अन्धेरियों में और कोई गीली और सूखी चीज़ नहीं मगर येह के सब एक रौशन किताब में लिखा हैं" । || وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ -

الحمد لله. कैसे क़ुरआन की रौशन आयतों से रौशन हुआ के हमारे हुज़ूर साहिबे क़ुरआन - صلى الله عليه وسلم को अल्लाह तआला ने तमाम चीज़ों का ---- مَا كَانَ وَمَا يَكُوْنُ और लव्हे महफ़ूज़ में तमाम शामिल चीज़ों का इल्म दिया और मश्रिक व मग़रिब व आसमान व अ़र्श व फ़र्श में कोई ज़र्रा हुज़ूर के इल्म से बाहर न रहा । और जब येह इल्म क़ुरआने अज़ीम के تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ (तर्जमा :- के इस में हर चीज़ का रौशन बयान है) से साबित हुआ और पूरी तरह ज़ाहिर के येह बयान तमाम कलामे मजीद का है न हर आयत या सूरत का तो तमाम क़ुरआन नाज़िल होने से पहले अगर बाज़ अम्बिया عليهم السلام के बारे में इरशाद हो لَمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ या

मुनाफ़िक़ों के बारे में फ़रमाया जाए لَا تَعْلَمُهُمْ हरगिज़ इन आयतों के ख़िलाफ़ और इल्मे मुस्तफ़ा के न होने की दलील नहीं हो सकता ।

الحمد لله जिस क़द्र क़िस्से व रिवायतें व ख़बरे व हिकायतें हुज़ूर मुहम्मद रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के अज़ीम इल्म के घटाने को क़ुरआन की आयतें पेश की जाती हैं उन सब का जवाब इन्हीं दो जुम्लों में हो गया है ।

तमाम मुख़ालेफ़त करने वालों को आम दावत है के فَاجْمِعُوا شُرَكَاءَكُمْ छोटे बड़े सब इकठ्ठे हो कर एक यक़ीनी आयत दलील के लिए, या एक हदीस मुतवातिर यक़ीनी हदीसों की किताबों से छाट कर लाऍ जिस से साफ़ खुले तौर पर साबित हो के तमाम क़ुरआने अज़ीम के नाज़िल होने के बाद भी इन बयान हुई चीज़ो में مَا كَانَ وَمَا يَكُونُ से फलॉ बात हुज़ूरे अक़्दस صلی اللہ علیہ وسلم وآلہ पर छूपी रह गई जिस का इल्म हुज़ूर को दिया ही न गया------------

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِىْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ -

तर्जमा :- और अगर ऐसी दलील न ला सको और हम कहे देते है के हरगिज़ न ला सकोगे, तो ख़ूब जान लो के अल्लाह राह नही देता दग़ाबाज़ों मक्कारों को ।

मौलवी रशीद अहमद गंगोही लिखता है------------------------

"फ़ख़्रे आलम —— علیہ السلام फ़रमाते है---- واللہ لا ادری ما یفعل بی ولا بکم और शेख़ अब्दुल हक़ रिवायत करते है के मुझ को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं" (मआज़ल्लाह)----------------

रहा शेख़ अब्दुल हक़ का हवाला, इस के सिवा के रिवायत व हिक़ायत में फ़र्क़ है इस बे अस्ल क़िस्से से दलील लाना और शेख़े मोहक़्क़िक़ अब्दुल हक़ मोहद्दीस قدس سرہٗ की तरफ़ इस हदीस की सनद मन्सूब करना कैसी जुर्अत व बे शर्मी है । जब के शेख़ मोहक़्क़िक़ अब्दुल हक़ मोहद्दीस "मदारिजुन्नुबुव्वत" में यूँ फ़रमाते हैं-----------------------

ایں جا اشکال می آرند کہ بعض روایات آمدہ است کہ گفت آں حضرت صلی اللہ علیہ وسلم من بندہ ام - نمی دانم آں چہ در پس ایں دیوار است جوابش آنست کہ ایں سخن اصلے نہ وارد - وروایت بداں صحیح نشدہ است -

तर्जमा :- एक एतराज़ किया जाता है के कुछ रिवायतों में है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم

ने फ़रमाया के मैं बन्दा हूँ, मुझे मालूम नही के इस दीवार के पीछे क्या है, तो इस का जवाब येह है कि इस हदीस की कोई अस्ल नहीं और येह रिवायत सही नहीं है ।)

इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी फ़रमाते है--- "لا اصل لہ" येह रिवायत बिल्कुल बे अस्ल है । इमाम इब्ने हजर मक्की ने किताब "अफ़ज़लुल क़ुरा" में फ़रमाया----- "لم یعرف سند" इस के लिए कोई सनद न पहचानी गई । (यानी इस रिवायत का कोई सुबूत नही ।)

अफ़सोस इसी मुँह से अपने अक़ीदे अच्छे बताना, सही हदीसों को भी झूटलाना, इसी मुँह से नबी صلی اللہ علیہ وسلم का अज़ीम इल्म घटा कर ऐसा बे अस्ल क़िस्सा सुबूत के तौर पर लाना, और दिखावे के लिए शेख़ मोहक़्क़िक़ अब्दुल हक़ मोहद्दीस दहलवी का नाम लिख जाना, जो साफ़ फ़रमा रहे है के इस क़िस्से की जड़ न बुन्याद, आप इस के सिवा क्या कहीये के ऐसों की दाद ना फ़रयाद । अल्लाह ! अल्लाह ! नबी-ए-करीम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की ख़ूबियों और फ़ज़ीलतों को छोड़ कर येह बकवास गिनाए, ताकि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीसें भी मरदूद बनाए और हुज़ूर की शाने अक़दस में तौहीन करने में दिलचस्पी दिखाएँ, के बे अस्ल बे सुबूत बातें सब समा जाएँ,

ع हाल ईमान का मालूम है बस जाने दो ।

सहीहैन बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत हुज़ैफ़ा رضی اللہ عنہ से रिवायत है---

"रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने एक बार हम में खड़े हो कर जब से क़ियामत तक जो कुछ होने वाला था सब बयान फ़रमा दिया कोई चीज़ न छोड़ी । जिसे याद रहा याद रहा जो भूल गया भूल गया ।

قام فینا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مقاما ما ترك شیئا یکون فی مقامہ ذلك الی قیام الساعۃ الا حدث بہ حفظہ من حفظہ ونسیہ من نسیہ

यही मज़मून "अहमद" ने मुस्नद में, बुख़ारी ने तारीख़ में, तबरानी ने कबीर में हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा رضی اللہ عنہ से रिवायत किया, सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अमीरुल मोमेनीन उमर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत है---

"एक बार सैय्यदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم ने हम में खड़े हो कर सब मख़्लूक़ की पैदाईश से ले कर जन्नतियों के

قام فینا النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مقاما فاخبرنا من بدء الخلق حتی دخل

جنۃ منازلہم واہل النار منازلہم حفظ ذٰلک من حفظہٗ ونسیہٗ من نسیہٗ ۔

जन्नत और दोज़ख़ियों के दोज़ख़ जाने तक का हाल हम से बयान फ़रमा दिया, याद रखा जिस ने याद रखा, और भूल गया जो भूल गया ।

सही मुस्लि शरीफ़ में हज़रत उमर बिन अख़्तब अन्सारी رضی اللہ تعالیٰ عنہ से है------ "एक दिन रसुलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने नमाज़े फ़ज्र के सूरज ग़ुरूब होने तक खुतबा फ़रमाया, बीच में ज़ोहर व अस्र की नमाज़ों के अलावह कुछ काम न किया

فاخبرنا بما ھو کائن الیٰ یوم القیٰمۃ فاعلمنا احفظہٗ ۔

उसमें सब कुछ हम से बयान फ़रमा दिया जो कुछ क़ियामत तक होने वाला था । हम में इल्म वाला वोह है जिसे ज़्यादा याद रहा ।

जामए तिर्मीज़ी शरीफ़ वग़ैरा बहुत सी हदीस की किताबों में बहुत से सुबूतों के साथ दस सहाबा-ए-किराम رضی اللہ تعالیٰ عنہم से रिवायत है के रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने फ़रमाया ———

فرأیتہٗ عزوجل وضع کفہٗ بین کتفی فوجدت بردَ انا ملہٖ بین ثدیی فتجلٰی لی کل شیءٍ وعرفت ۔

"मैं ने अपने रब को देखा उस ने अपना दस्ते क़ुदरत मेरी पीठ पर रखा के मेरे सीने में उसकी थन्ड़क महसूस हुई उसी वक़्त हर चीज़ मुझ पर रौशन हो गई और मैं ने सब कुछ पहचान लिया" ।

इमाम तिर्मीज़ी फ़रमाते हैं———

ھٰذا حدیث حسن صحیح سألت محمد بن اسمٰعیل (امام بخاری) عن ھٰذا الحدیث فقال صحیح ۔

"येह हदीस हसन सही है मैं ने इमाम बुख़ारी से इस हदीस का हाल पुछा तो फ़रमाया के येह हदीस सही है" ।

उसी (तिर्मीज़ी शरीफ़) में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ से इसी मेराज शरीफ़ के बयान में रिवायत है रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया——

فعلمت ما فی السمٰوٰت والارض ۔

"जो कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं सब मेरे इल्म में आ गया" ।

शेख़ मोहक़्क़िक़ (शाह अब्दुल हक़ मोहद्दिस दहलवी) رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ "शरहे मिश्कात" में इस हदीस के नीचे फ़रमाते हैं———

"پس دانستم ہرچہ در آسمانہا و ہرچہ در زمین ہا بود - عبارت است از حصول...

(तर्जमा :- यानी मैं जान गया जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है बाज़ और तमाम उलूमों को।)

इमाम अबू ज़र गिफ़्फ़ारी رضی اللہ تعالیٰ عنہ और 'अबू यअ़ली' व 'इब्ने मुनब्बे' व 'तबरानी' हज़रत अबू ज़र गिफ़्फ़ारी رضی اللہ عنہ से रिवायत करते है--

لقد تركنا رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم وما يحرك طائر جناحيه في السماء إلا ذكر لنا منه علما ◆

"नबी صلی اللہ علیہ وسلم ने हमें इस हाल पर छोड़ा के हवा में कोई परिन्दा पर मारने वाला ऐसा नही जिस का इल्म हुज़ूर ने हमारे सामने बयान न फ़रमा दिया हो"।

नसीमुर्रियाज़ शरहे शिफ़ा-ए-काज़ी अयाज़ व शरहे ज़रकानी लिल मुवाहिब में है--------

هذا تمثيل لبيان كل شيء تفصيلا تارة وإجمالا أخرى -

"यह एक मिसाल दी है उसकी के नबी صلی اللہ علیہ وسلم ने हर चीज़ बयान फ़रमादी कभी तफ़सील से कभी मुख़्तसर।

मुवाहिब इमाम अहमद कस्तलानी में है--------

ولا شك أن الله تعالى قد أطلعه على أزيد من ذلك وألقى عليه علم الأولين والآخرين ◆

"और कुछ शक नहीं के अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم को इस से ज़्यादा इल्म दिया और तमाम अगलों पिछलों का इल्म हुज़ूर पर ज़ाहिर फ़रमा दिया।

तबरानी मुअ़जमे कबीर और 'नसीम बिन हेमाद' किताबुल फ़ितन और अबू नईम हुलिया में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ تعالیٰ عنہما से रिवायत करते है, रसूल صلی اللہ علیہ وسلم फ़रमाते है --------

إن الله قد رفع لي الدنيا فأنا أنظر إليها وإلى ما هو كائن فيها إلى يوم القيامة كأنما أنظر إلى كفي هذه جليان من الله جلاه لنبيه كما جلاه للنبيين من قبله ◆

"बिशक मेरे सामने से अल्लाह عزوجل ने दुनिया उठा ली है और मैं उसे और जो कुछ उस में क़ियामत तक होने वाला है सब कुछ ऐसा देख रहा हूँ जैसे अपनी हथेली को देख रहा हूँ। इस रौशनी के सबब जो अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी के लिए रौशन फ़रमाई जैसे मुहम्मद से पहले अम्बिया

के लिए रौशन की थी ।

इस हदीस से रौशन है के जो आसमानों व ज़मीनों में है और जो क़ियामत तक होंगा उस सब का इल्म अगले अम्बिया عليهم السلام को भी अता हुआ था और अल्लाह ने तमाम चीज़ों को अपने महबूबों के पेशे नज़र फ़रमा दिया, मसलन मश्रिक से मग़रिब तक पहले आसमान से सातवे आसमान तक, ज़मीन से आसमान तक उस वक़्त जो कुछ हो रहा है, सैय्यदना इब्राहीम ख़लील عليه السلام हज़ारों बरस पहले उस सब को ऐसा देख रहे थे गोया उस वक़्त हर जगह मौजूद है । ईमानी निगाह में येह न अल्लाह की क़ुदरत के लिए मुश्किल और न ईज़्ज़त व शान व अज़मते अम्बिया के मुक़ाबले बहुत ज्यादा । मगर बेचारे एतराज़ करने वाले जिन के यहाँ खुदा की हक़ीक़त इतनी हो के एक पेड़ के पत्ते गिन दिये वोह आप ही उन हदीसों को शिर्के अकबर कहना चाहें और जिन अइम्म-ए-किराम व ओ़लमा-ए-अ़लाम उन से सुबूत लाए, उन्हें क़ुबूल किया और हमेशा बरक़रार रखा, जैसे इमाम ख़ातेमुल हिफ़्फ़ाज़ इमाम जलालुद्दीन सुयूती मुसन्निफ़ "ख़साइसुल कुबरा" व इमाम शुहाब अहमद मुहम्मद ख़तीब क़स्तलानी मुसन्निफ़ "मुवाहिबुल दुन्निया" व इमाम अबूल फ़ज़ल शुहाब इब्ने हजर मक्की हेसीमी शारहे शिफ़ा क़ाज़ी अयाज़ व अ़ल्लामा मुहम्मद बिन अ़ब्दुल बाक़ी ज़रक़ानी शारहे मुवाहिब वग़ैरा رحمهم الله تعالى उन्हें मुशरिक कहें । والعياذ بالله-

सही मुस्लिम व मुस्नदे इमाम अहमद व सुनन इब्ने माजा में अबूज़र رضی الله عنه से है रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم फ़रमाते है-------------

"मेरी उम्मत अपने सब आ़माल नेक व बद के साथ मेरे हुज़ूर (पास) पेश की गई" ।

عرضت علی امتی باعمالها حسنها وسيئها ...

तबरानी और ज़िया-ए-मुख़तारह में हुज़ैफ़ बिन उसैद رضی الله تعالى عنه से रिवायत है, रसूलुल्लाह صلى الله تعالى عليه وسلم फ़रमाते हैं-----------------

"कल रात मुझ पर मेरी उम्मत उस हुजरे के पास मेरे सामने पेश की गई बेशक मैं ने उन के हर शख़्स को उस से ज़्यादा पहचानता हूँ जैसा तुम में कोई अपने साथी को पहचाने" ।

عرضت علی امتی البارحة لدی هذا الحجرة حتى لانا اعرف بالرجل منهم من احدكم بصاحبه ✦

इमाम अजल सैय्यदी बूसेरी قدس سره "इमामुल कुरा" में फरमाते है

रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم का इल्म तमाम जहान को घेरे हुए है (यानी हुज़ूर तमाम जहान से ज़्यादा इल्म रखते हैं और सब कुछ जानते हैं)

وسع العالمين علماً و حكماً۔

इमाम इब्ने हजर मक्की, इस की शरह "अफ़ज़लुल क़ुरा" में फ़रमाते हैं

"यह इस लिए के बेशक अल्लाह ने हुज़ूरे अक़दस صلى الله عليه وآله وسلم को तमाम जहान पर इत्तेला बख़्शी तो सब अगले पिछलों और ما كان وما يكون का इल्म हुज़ूर पुरनूर को हासिल हो गया।

لان الله تعالى اطلعه على العالم فعلم علم الاولين والاخرين وما كان ما يكون۔۔

इमामे जलील क़ुदवतुल मोहद्देसीन सैय्यदी ज़ैनुद्दीन ईराक़ी उस्ताद इमाभ हाफ़िज़ुल शान इब्ने हजर असक़लानी शरहे "महज़ब" में फिर अल्लामा ख़फ़ाजी "नसीमुर्रियाज़" में फ़रमाते है-----------------------

"हज़रत आदम عليه السلام से ले कर क़ियामत होने तक की तमाम अल्लाह की मख़लूक़ात को हुज़ूर सैय्यदे आलम صلى الله تعالى عليه وسلم को पेश की गई हुज़ूर ने तमाम पहली की मख़लूक़ात और जो आइन्दह होंगी सब को पहचान लिया जिस तरह आदम عليه السلام को तमाम चीजों के नाम सिखाए गए थे।

انه صلى الله تعالى عليه وسلم عرضت عليه الخلائق من لدن آدم عليه الصلوة والسلام الى قيام الساعة فعرفهم كلهم كما علم آدم الاسماء۔۔

अल्लामा अब्दुर्रउफ़ मुनादी "तैसीर" में फ़रमाते हैं-------------

"पाकीज़ा जानें जब बदन के ईलाक़ों से जुदा हो कर जन्नत में रहने वालों से मिलती हैं तो उनके लिए कोई पर्दा नही रहता हैं, वोह हर चीज़ को ऐसा देखती और सुन्नती हैं जैसे पास हाज़िर हैं।

النفوس القدسية اذا تجردت عن العلائق البدنية اتصلت با لملاء الاعلى ولم يبق لها حجاب فترى و تسمع الكل كا المشاهد

इमाम इब्नुल हाज्ज मक्की मुदख़्ख़ल और इमाम क़स्तलानी मुवाहिब में फ़रमाते हैं-----------------------

"बेशक हमारे ओलमा-ए-किराम

قد قال علماءُنا رحمهم

اللہ تعالیٰ لک فرق بین موتہ وحیاتہ صلی اللہ علیہ وسلم فی مشاھدتہ لامتہ ومعرفتہ باحوالھم ونیاتھم وعزائمھم وخواطرھم وذالک جلی عندہ لا خفاء بہ ۔

ने फरमाया रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की दुनियावी हयात और इस वक़्त की हालत में कुछ फर्क़ नहीं है इस बात में के हुज़ूर अपनी उम्मत को देख रहे है उन के हर हाल उन की हर नियत उन के हर इरादे उनके दिलों के ख़ातरों को पहचानते हैं और येह सब चीज़ें हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم पर ऐसी रौशन (ज़ाहिर) हैं जिन में हरगिज़ किसी तरह की पोशिदगी नहीं ।

मुहम्मद रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के बारे में येह अक़ीदें हैं ओलमा-ए-रब्बनीन के । ओलमा-ए-हिन्दुस्तान के शेख़ों के शेख़ हज़रत मौलाना शेख़ अब्दुल हक मोहद्दिस दहलवी نور اللہ مرقدہ الکریم "मदारिजुन्नुबुव्वत" में फ़रमाते है—

" ذکر کن او را و درود بفرست بروے صلی اللہ علیہ وسلم ۔ و باش درحال ذکر گو یا حاضر ہست پیش تو درحالت حیات می بینی تو او را متادب باجلال و تعظیم و ہیبت وامید بداں کہ وے صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم می بیند وی شنود کلام ترا زیراکہ وے صلی اللہ علیہ وسلم متصف است بصفات اللہ و یکے از صفات الٰہی آنست کہ انا جلیس من ذکرنی ۔ "

(*तर्जमा* :- उन की याद कर और उन पर दुरूद भेज, और ज़िक्र के वक़्त ऐसे हो जाओ गोया तुम उनकी ज़िन्दगी में उन के सामने हाज़िर हो और उन को देख रहे हो पूरे अदब और तअज़ीम से रहो, हैबत भी हो और उम्मीद भी और जान लो के रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم तुम्हें देख रहे है और तुम्हारी बात सुन रहे है क्योंकि अल्लाह की सिफात से नवाज़े गए है और अल्लाह की एक सिफ़त येह है कि जो मुझे याद करता है मै उसके पास होता हूँ ।)

अल्लाह तआला की बेशुमार रहमतें शेख़े मोहक्किक़ (अब्दुल हक मोहद्दिस दहलवी) पर, जब नबी صلی اللہ علیہ وسلم को हमारा देखना ज़िक्र किया, गोया फरमाया । और जब हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم का देखना हमें बयान किया,----ग़र्ज़ के ईमानी निगाहों के सामने उस हदीसे पाक की तस्वीर

खींच दी के-- ---------------

اعبد اللہ کانک تراہ فان لم تکن تراہ فانہ یراک ۔۔

अल्लाह तआ़ला की ईबादत कर, (इस तरह के) गोया तूं उसे देख रहा है और अगर तू उ़से न देखे तो वोह तो यक़ीनन तुझे देखता है । - جل جلالہ صلی اللہ تعالی علی نبیہ وآلہ وبارک وسلم

और (यही शाह अ़ब्दुल ह़क़ मोहद्दिस दहलवी علیہ الرحمہ) फ़रमाते हैं-------

ہرچہ در دنیا است از زمانِ آدم تا نفخۂ اولی بروے صلی اللہ تعالی علیہ وسلم منکشف ساختند، تا ہمہ احوالِ اورا از اوّل تا آخر معلوم گردید یارانِ خود را نیز از بعضے ازاں احوال خبر داد ۔۔

(*तर्जमा* :- जो कुछ दुनिया में ह़ज़रत आदम علیہ السلام से ले कर क़ियामत के रोज़ पहले सूर के फूंके जाने तक है अल्लाह ने हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم पर सब कुछ ज़ाहिर फ़रमा दिया, ताकि अव्वल से आख़िर तक तमाम ह़लात मालूम हो जाएँ, उन्हों ने कुछ असहाब (सहाबा-ए-किराम) को उन बातों में से कुछ की ख़बर दी ।)

और (यही शाह अ़ब्दुल ह़क़ मोहद्दिस दहलवी علیہ الرحمہ) फ़रमाते है-------------

وھو بکلِ شیءٍ علیم ؕ و وے صلی اللہ علیہ وسلم دانا است بہمہ چیز از شیونات و احکام الہی و احکام صفاتِ حق و اسماء و افعال و آثار و بجمیع علومِ ظاہر و باطن و اوّل و آخر احاطہ نمودہ و مصداق، فوق کلِّ ذی علمٍ علیم شدہ علیہ من الصلوٰت افضلہا ومن التسلیمات اکملہا ۔۔

(तर्जमा :- وہو بکل شیء علیم और हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم सब चीज़ों को जानने वाले हैं सब के हालात, अल्लाह के हुक्मों को, उसके हक्मों की सिफ़तों को, सब के नाम, काम, और आसार, तमाम ज़ाहिर व बातिन के उलूम अव्वल से आख़िर तक सब आप के सामने है ।)

शाह वली अल्लाह दहलवी, "फ़ुयुज़ूल हरमैन" में लिखते हैं-------

فاض علیّ من جنابہ المقدس صلی اللہ تعالی علیہ وآلہ وسلم کیفیۃ العبد من حیزہ الی حیز القدس فیتجلی لہ کل شیء کما اخبر عن ھذا المشھد فی قصۃ المعراج المنامی ۔۔

"हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم की बारगाहे अक़दस से मुझ पर उस हालत का इल्म अता हुआ के बन्दा अपने मक़ाम से मक़ामे मुक़द्दस तक क्यों कर तरक़्क़ी करता है के उस पर हर चीज़ रौशन हो जाती हैं जिस तरह हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم ने अपने इस

मक़ामे मेराजे ख़्वाब के क़िस्से में ख़बर दी ।

क़ुरआन व हदीस व बहुत पहले के इमामों से इस मतलब पर बेशुमार दलीलें हैं और ख़ुदा इन्साफ़ दे तो यही कम जो बयान हुआ बहुत ज़्यादा हो जाए । ग़र्ज़ सूरज की रौशनी की तरह रौशन हुआ के ज़ैद के अक़ीदे के हुज़ूर को अल्लाह तआला ने इल्मे ग़ैब अता फ़रमाया हैं इस अक़ीदे को मआज़ल्लाह कुफ़्र व शिर्क कहना ख़ूद क़ुरआने अज़ीम पर तोहमत रखना और सैकड़ों सही मशहूर साफ़ खुली हुई ज़ाहिर हदीसों का रद्द करना और सैकड़ों अइम्मा-ए-दीन व बुज़ुर्गो, बड़े बड़े ओलमा-ए-आमेलीन व अज़ीम औलिया-ए-कामेलीन رحمہم اللہ تعالیٰ यहॉ तक के शाह वली अल्लाह, शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब को भी عیاذاً باللہ काफ़िर व मुश्रिक बनाना, और सही हदीसों व भरोसे मन्द फ़क़हीय-ए-किराम के हुक्म से ख़ूद काफ़िर व मुश्रिक बनना हैं, इस के मुतअल्लिक़ कई हदीसें व रिवातें व इमामों की बातें फ़कीर के रिसाले "النہی الاکید عن الصلوٰۃ وراء عدی التقلید" और रिसाला "الکوکبۃ الشہابیۃ علی کفریات ابی الوہابیۃ" में देखिये ।

अफ़सोस के इन शिर्क बेचने वाले अन्धों को इतना नहीं सूझता के अल्लाह का इल्म ज़ाती है और बन्दे का इल्म अताई, अल्लाह का इल्म वाजिब बन्दे का इल्म मुमकिन, अल्लाह का इल्म पहले से-बन्दे का इल्म पहले से नहीं, अल्लाह का इल्म मख़लूक़ नहीं-बन्दे का इल्म मख़लूक़, अल्लाह का इल्म गुनजाईश से बाहर-बन्दे का इल्म गुनजाईश में, अल्लाह का इल्म हमेशा हमेशा बक़ी रहने वाला,-बन्दे का इल्म फ़ना होने वाला, अल्लाह का इल्म बदलने से पाक-बन्दे का इल्म बदलना मुमकिन, । इन अज़ीम बटवारों के बाद शिर्क का शक न होगा, मग़र किसी मजनू (पागल) अक़्ल के अन्धे को । इस इल्म ما کان وما یکون जो बयान हुआ उसे मआज़ल्लाह ! इल्मे इलाही के बराबर मान लेना समझते हैं हलॉकि अल्लाह तआला का इल्म तो वोह है जिस में बे इन्तिहा तफ़्सील के साथ बहुत बहुत है जिस की कोई इन्तिहा नहीं या वोह जिस का हिसाब लगाना न मुम्किन कहिये, उस का इल्म पहले से है और हमेशा हमेशा रहेगा ।

येह मश्रिक से मग़रिब, आसमानों से ज़मीन, व फ़र्श से अर्श तक وما کان وما یکون من اول یوم الی آخر الایام सब के ज़र्रे ज़र्रे का हाल

तफ़्सील से जानना व तमाम लव्ह व कलम के छूपे हुए का तफ़्सील के साथ जनना मुहम्मद रसूलुल्लाह - صلى الله عليه وسلم के इल्मों से एक छोटा सा टुकड़ा हैं । येह तो उन के सदक़े से उन के भाईयों मुर्सलीने किराम (रसूलों) عليه وعليهم افضل الصلوة واكمل السلام को बल्कि उनकी अ़ता से उन के ग़ुलामों, बाज़ औलिया-ए-अज़्ज़ाम قدست اسرارهم को मिला हैं और मिलता हैं ।

अल्लाह عزوجل की बेशुमार रहमतें इमामे अजल मुहम्मद बूसेरी शरफ़ुल हक़ वद्दीन رحمة الله تعالى عليه पर "क़सीदह बुरदह" शरीफ़ में फ़रमाते है--

فان من جودك الدنيا وضرتها
ومن علومك علم اللوح والقلم

यानी या रसूलुल्लाह ! दुनिया और आख़िरत दोनों हुज़ूर के बख़्शिश व करम के ख़्वान से एक टुकड़ा हैं और लव्ह व क़लम का तमाम इल्म जिन में सब कुछ लिखा हुआ हैं हुज़ूर के उलूम (इल्मों) से एक हिस्सा है ।

मुनकेरीन (यानी हुज़ूर के इल्मे ग़ैब के इन्कार करने वालों) को सदमा हैं के मुहम्मद रसूलुल्लाह - صلى الله عليه وسلم के लिए रोज़े अव्वल से क़ियामत तक के तमाम ما كان وما يكون का इल्म तफ़्सीली मनाना जाता हैं । लेकिन بحمد الله تعالى वोह तमाम इल्म ما كان وما يكون हुज़ूर मुहम्मद रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم के इल्मों के अज़ीम समन्दरों से एक नहर है बल्कि बे इन्तिहा मौजों से एक लहर क़रार पाता हैं ।

जिन आयतों व हदीसों में इरशाद हुआ है के ग़ैब का इल्म होना अल्लाह तआ़ला के लिए ही ख़ास है, अल्लाह عزوجل के सिवा कोई नहीं जानता, यक़ीनन हक़ और بحمد الله تعالى मुसलमान के ईमान हैं मगर मुन्किर ग़रूर करने वालों का अपने झूटे दावे में उन आयतों व हदीस से सुबूत लाना और उसकी बिना पर हुज़ूर पुरनूर صلى الله عليه وسلم के इल्म ما كان وما يكون जो के अभी बयान किया गया उनके मानने वालों पर कुफ़्र व गुमराही का हुक्म लगाना, पागल पन की दलील व कमज़ोर ख्याल है बल्कि ख़ूद काफ़िर व गुमराह होना हैं ।

इल्म अपने मक़सद के एतेबार से दो क़िस्म का होता है एक ज़ाती के अपनी ज़ात से बग़ैर किसी के दिये से हो । और दूसरा अ़ताई, के अल्लाह का अ़तीया (बख़्शा हुआ) हो । इस तक़सीम में इल्मे ज़ाती

अल्लाह عزوجل के लिए ख़ास है और हरगिज़ किसी ग़ैर के लिए इस तरह का इल्म होने का कोई भी क़ाएल नहीं ।

इमामे अजल अबू ज़करया नववी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ अपने फ़तावे फिर इमाम इब्ने हजर मक्की رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ अपने 'फ़ताव-ए-हदीसिया' मे फ़रमाते हैं------

لا يعلمه ذالك الا الله استقلالا وعلم احاطة بكل المعلومات الا الله تعالى اما المعجزات والكرامات فباعلام الله تعالى لهم علمت وكذا ما علم باجراء العادة -

"यानी, आयंत में ग़ैर खुदा से इल्मे ग़ैब का जो इन्कार है उसके येह मअ़नी है के ग़ैब अपनी ज़ात से बे किसी के बताए जनना और अल्लाह का जो इल्म है येह अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी को नहीं । रहे अम्बिया के मोजेज़े और औलिया की करामतें यहाँ तो अल्लाह عزوجل के बताने से उन्हें इल्म हुआ है, यूँ ही वोह बातें के आ़दत की वजह से जिन का इल्म होता हैं" ।

मुख़ालेफ़त करने वालों का सुबूत लाना व ख़्याल झूटा होना यही से ज़ाहिर हो गया ।

बकर की मक्कारी का वोह मरदूद ख़्याल जिस में हुज़ूर की निसबत (के हुज़ूर कुछ नही जानते) का लफ़ज़ ना पाक है वोह भी कुफ़्र का कलमा व गुमराही बेबाक़ी है । बकर ने जिस अक़ीदे को कुफ़्र व शिर्क कहा और उस के रद्द में वोह बात बका जिस का अन्जाम अच्छा नहीं होगा, (जब कि) ख़ूद इसी में साफ़ है के रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم को अल्लाह तआ़ला جل وعلا ने येह इल्म अ़ता फ़रमाया है । बकर का अ़ताई इल्म का भी इन्कार कर देना और ख़ूद बाज़ इन्सानी शैतान के क़ौल से सुबूत लाना भी उस तअ़लीम पर साफ़ दलील हैं के उस का कहना के (चाहे ज़ाती इल्मे ग़ैब मानो या अ़ताई मानो) दोनें सूरत पर हुक्मे शिर्क दिया है । अब उसके बुरे कलमए कुफ़्र होने में क्या शक हो सकता है, क़ुरआन की रौशन आयतों का इन्कार बल्कि सारे क़ुरआन का इन्कार, नबी صلی اللہ علیہ وسلم की रिसालत का इन्कार, बल्कि तमाम अम्बिया का इन्कार हैं और सैय्यदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم की तौहीन बल्कि रब्बुल ईज़्ज़त جل جلالہ की शान में तौहीन है, एक दो कुफ़्र हो तो गिने जाएँ ।

यूँ ही उस का येह कहना के अपने ख़ातमे का भी हाल मालूम न था साफ़ कुफ़्र है और बेशुमार क़ुरआन की आयतों व हदीसों का इन्कार है ।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ۝

अए नबी ! बेशक आख़िरत तुम्हारे लिए दुनिया से बेहतर है ।

और फ़रमाता है अल्लाह तआला—

وَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ۝

बेशक नज़दीक़ है के तुम्हारा रब तुम्हें इतना अता फ़रमाएगा के तुम राज़ी हो जाओ ।

और फ़रमाता है अल्लाह तआला—

يَوْمَ لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِىَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ ۝

जिस दिन अल्लाह रूस्वा न करेगा नबी और उनके सहाबा को उनका नूर उन के आगे और दाहिने दौड़ेगा ।

और फ़रमाता है अल्लाह तआला—

عَسٰى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ۝

क़रीब है के तुम्हारा रब तुम्हें तअरीफ़ के मकान में भेजेगा जहाँ अव्वलीन व आख़ेरीन सब तुम्हारी तअ़रीफ़ करेंगे ।

और फ़रमाता है अल्लाह तआला—

تَبٰرَكَ الَّذِىْ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَيَجْعَلُ لَّكَ قُصُوْرًا ۝ على قراءة الرفع قراءة ابن كثير وابن عامر ورواية ابي بكر عن عاصم ۝

बड़ी बरकत वाला है वोह जिस ने अपनी क़ुरदत से तुम्हारे लिए ख़ज़ाने व बाग़ से (जिस की तलब येह काफ़िर कर रहे हैं) बेहतर चीज़ें कर दी जन्नतें जिनके नींचे नहरें बहे और वोह तुम्हें जन्नत के उँचे उँचे महल बख़्शेगा ।

और हदीसें जिस की ख़ूबसूरत तफ़्सील हुज़ूरे अक़दस ﷺ की फ़ज़ीलतों व ख़ूबियों की वफ़ात मुबारक व बर्ज़ख़ व हशर व शफ़ाअत व कौसर व ख़ीलाफ़ते उज़मा व सब से बड़ी सरदारी व जन्नत में दाख़ला, अल्लाह का दिदार वग़ैर के बारे में जो आई है । उन्हें जमा कीजिये तो एक लम्बा दफ़्तर होता है । यहाँ सिर्फ़ एक हदीस तबर्रुक के तौर पर सुन लीजिये ।

"जमाए तिर्मीज़ी शरीफ़" में अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ से है, रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم फ़रमाते है---

انا اول الناس خروجا اذا بعثوا وانا خطیبھم اذا وفدوا وانا خطیبھم اذا انصتوا وانا مستشفعھم اذا حبسوا وانا مبشرھم اذا یئسوا الکرامۃ والمفاتیح یومئذ بیدی وانا اکرم ولد آدم علی ربی یطوف علی الف خادم کانھم بیض مکنون او لؤلؤ منثور۔

"जब लोगों का हश्र होंगा तो सब से पहले मैं मज़ारे मुबारक से बाहर तशरीफ़ लाऊँगा और जब वोह सब ख़ौफ़ ज़दा रहेंगे तो उनका ख़ुतबा देने वाला मैं होगा, और जब वोह रोके जाएगे तो तो उन का शफ़ाअ़त करने वाला मैं होंगा, और जब वोह न उम्मीद हो जाऐंगे तो उनका बंशारत देने वाला मैं होगा, इज़्ज़त देना, और तमाम कुन्जीयाँ उस दिन मेरे हाथ होगी, लिवउल हम्द (झन्ड़ा) उस दिन मेरे हाथ में होगा, बारगाहे रब्बुल इज़्ज़ॅत में मेरी इज़्ज़त तमाम औलादे आदम से ज़्यादा है, हज़ार ख़िदतमगार मेरे आस पास रहेंगे गोया वोह धूल मिंट्टी से पाक पकीज़ा हैं या जगमगाते मोती हैं बीख़रे हुए ।

ग़र्ज़ के बक्र के गुमराह व बद दीन होने में हरगिज़. कोई शक नही । और अगर कुछ न होता तो सिर्फ़ इतना ही के "तक़्वीयतुल ईमान" पर जो हक़ीक़त में तफ़्वीयतुल ईमान (ईमान को ढ़ाने वाली किताब) है उस किताब पर उसका ईमान है यही उसका ईमान सलामत न रखने को बस था, जैसा के फ़क़ीर के रिसाले الکوکبۃ الشہابیہ वग़ैरा के पढ़ने पर ज़ाहिर है ।

वोह शख़्स जो शैतान के ख़बीस इल्म को हुज़ूर पुरनूर صلی اللہ علیہ وسلم के इल्मे अक़्दस ما کان وما یکون से ज़्यादा कहे उसका जवाब इस कुफ़्र की जगह हिन्दुस्तान में क्या हो सकता है انشاء اللہ القہار रोज़े जज़ा वोह ना पाक अपनी इस कुफ़्री बकवास की सज़ा पाएगे وسیعلم الذین ظلموا

اَیَّ مُنْقَلَبٍ یَّنْقَلِبُوْنَ यहाँ इसी क़द्र काफ़ी है के येह ना पाक कलमा साफ़ मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمْ को अ़येब लगाना है । और हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمْ को अ़येब लगाना कलमा-ए-कुफ़्र न हुआ तो कलमा-ए-कुफ़्र क्या होंगा !

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है-----------------------------------

وَالَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰہِ لَھُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰہَ وَرَسُوْلَہٗ لَعَنَھُمُ اللّٰہُ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ وَاَعَدَّ لَھُمْ عَذَابًا مُّھِیْنًا ۝

और जो लोग अल्लाह को तक्लीफ़ देते हैं उन के लिए दुख की मार हैं । जो लोग तक्लीफ़ देते हैं अल्लाह और उसके रसूल को, अल्लाह ने उन पर लअ़नत फ़रमाई है दुनिया और आख़िरत में और उन के लिए तैयार कर रखी है ज़िल्लत वाली मार ।

शिफ़ा-ए-इमामे अजल क़ाज़ी अयाज़ और शरहे अ़ल्लामा शुहाब ख़फ़ाजी "नसीमुर्रियाज़" में है-----------------------------------

جمیع من سب النبی صلی اللہ علیہ وسلم او شتمہ ای عابہ صواعم من السب فان من قال فلان اعلم منہ صلی اللہ علیہ وسلم فقد عابہ ونقصہ وان لم یسبہ فھو ساب من غیر فرق بینھما (لا نستثنی منہ) فصلا ای صورۃ (ولا نمتری) فیہ تصریحا کان او تلویحا وھذا کلہ اجماع من العلماء وائمۃ الفتوی من لدن الصحابۃ رضوان اللہ تعالی عنھم الی ھلم جرا - اھ مختصرا

यानी जो शख़्स नबी صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمْ को गाली दे या हुज़ूर को अ़येब लगाएं और येह गाली देने से कम है के जिसने किसी की निसबत कहा के फलॉ का इल्म नबी صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمْ के इल्म से ज़्यादा है, उस ने ज़रूर हुज़ूर को अ़येब लगाया, हुज़ूर की तौहीन की, अगरचे गाली न दी, येह सब गाली देने वाले के हुक्म में हैं उनके और गाली देने वाले के हुक्म में कोई फ़र्क़ नहीं । न हम उस से किसी सूरत को जुदा करें न उस में शक व इन्कार को राह दे साफ़ साफ़ कहा हो या इशारे में कहा हो । उन सब बातों पर ओ़लमा और अइम्मा-ए-किराम के

फ़तवों का इजमा (इत्तिफ़ाक) हैं जो के सहाबा-ए-किराम رضی اللہ تعالیٰ عنہم के ज़माने से आज तक चला आया हैं ।

फ़क़ीर غفرلہ القوی ने इस सवाल के आने पर एक मुकम्मल किताब चार हिस्सों में लीखी जिसका तारीख़ी नाम "مالئ الحبیب بعلوم الغیب" ١٣١٨ھ है ।

यह मुख़्तसरसा फ़तवा है और तारीख़ के लिहाज़ से इस का नाम "إنباء المصطفیٰ بحال سر و اخفی" ١٣١٨ھ है ।